**पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में**

**2004 का आपराधिक आवेदन (एकल पीठ) संख्या 94**

==========

लंगर भगत, पिता- स्वर्गीय अभिचंद भगत, निवासी गाँव-चिंतामनपुर, पी.एस. माहेसी, जिला-पूर्वी चंपारण

... ... अपीलकर्ता/गण

बनाम

बिहार राज्य

... ... उत्तरदाता/गण

==========

**उपस्थितिः**

अपीलार्थी/ओं की ओर से : श्री रवि भारद्वाज, एमीकस क्वेरी

प्रत्यर्थी की ओर से : सुश्री अनीता कुमारी सिंह, एपीपी

==========

***अपील***- *उस दोषसिद्धि के फैसले के खिलाफ दायर की गई है, जिसमें संबंधित ट्रायल कोर्ट ने अपीलकर्ता/दोषी को भारतीय दंड संहिता की धारा 307 के तहत अपराध के लिए दोषी ठहराया है।*

***निर्णय***- *घटना का स्थान एक कमरा था और यह मध्यरात्रि का समय था, वहां कोई प्रकाश का स्रोत नहीं था और ऐसे में अपीलकर्ता की पहचान उन व्यक्तियों द्वारा जो अपीलकर्ता से परिचित नहीं थे, संदेहास्पद प्रतीत होती है। सूचनाकर्ता/पीड़िता ने स्वयं स्पष्ट रूप से कहा कि वह अपीलकर्ता/दोषी से परिचित नहीं थी और घटना के दौरान उसकी आंखें बंद थीं और उसे यह जानकारी एक अन्य गवाह से मिली कि अपीलकर्ता ने उस पर तेजाब फेंका। - ऐल्यूमिनियम का बर्तन (जिससे उसने पीड़िता पर तेजाब डाला) और अपीलकर्ता को घटना के बाद तुरंत स्थानीय चौकीदार को सौंप दिया गया था, लेकिन उक्त ऐल्यूमिनियम का बर्तन कभी जब्त नहीं किया गया और न ही रासायनिक/फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा गया। - इस मामले में जांच अधिकारी ने स्पष्ट रूप से कहा कि अभियोजन पक्ष के गवाहों ने जांच के दौरान बताया कि अपीलकर्ता/दोषी को सुबह में गिरफ्तार किया गया, जब वह*

*खेतों में काम कर रहा था। इसलिए, घटना के बाद सूचनाकर्ता के आंगन में तुरंत गिरफ्तारी के संदर्भ में, गवाह पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं दिखते, भले ही वे घायल गवाह हों। - जांच अधिकारी ने यह भी यह कहना नकारा किया कि घटना स्थल पर जमीन पर पाए गए काले पदार्थ को एकत्रित किया जाए और रासायनिक/फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जाए, ताकि यह पता लगाया जा सके कि वह तेजाब था या नहीं। रासायनिक जांच के अभाव में, कथित रूप से फेंका गया पानी जैसा पदार्थ भारतीय दंड संहिता की धारा 326 के तहत केवल चोटों के आधार पर, संदेह से परे, जंगली पदार्थ के रूप में भी वर्गीकृत नहीं किया जा सकता। (पैरा 29)*

*डॉक्टर की गवाही में कहीं भी यह सुझाव नहीं दिया गया कि उसकी चोट ऐसी प्रकृति की थी, जो जीवन के लिए खतरे का कारण हो, इसलिए अपीलकर्ता के कृत्य से मृत्यु होने की संभावना के बारे में इरादा या ज्ञान, जो trial के दौरान सामने आए तथ्यों से स्पष्ट है, वह अनुपस्थित है। (पैरा 30)*

*अपील स्वीकार की जाती है। (पैरा 31)*

==========

**पटना उच्च न्यायालय का निर्णय आदेश**

==========

**कोरमः माननीय न्यायमूर्ति श्री चंद्र शेखर झा**
**मौखिक निर्णय**

**तारीखः 08-07-2024**

यह अपील अपीलार्थी/दोषी द्वारा दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 374 (2) (इसके बाद 'संहिता' के रूप में संदर्भित) के तहत की गई है, जिसमें 2003 के सत्र परीक्षण संख्या 112/106 में द्वितीय अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण द्वारा पारित दोषसिद्धि के निर्णय और सजा के आदेश

को चुनौती दी गई है, जिसके तहत संबंधित विचारण न्यायालय ने अपीलार्थी/दोषी को भारतीय दंड संहिता की धारा 307 के तहत दंडनीय अपराध के लिए दोषी ठहराया है और उसे दस साल के लिए कठोर कारावास और 3000/- रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई है। 3,000/- जुर्माने का भुगतान न करने पर आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत दंडनीय अपराध के लिए छह महीने के लिए कठोर कारावास की सजा भुगतनी होगी।

**2.** अभियोजन पक्ष का मामला लिखित जानकारी के माध्यम से प्रतीत होता है, जैसा कि सूचना देने वाली कांति देवी/अभियोजन साक्षी 5 द्वारा दर्ज किया गया है, कि जब वह अपनी ननद कृष्णा कुमारी/अभियोजन साक्षी 7 के साथ रात का खाना खाने के बाद अपने घर में सो रही थी, तो अपीलार्थी/दोषी उसके कमरे में घुस गया जो बिना दरवाजे के था और उसने उसके चेहरे पर पानी जैसा कुछ पदार्थ फेंक दिया जिससे जलन हुई, जिससे उसकी आंखें भी क्षतिग्रस्त हो गईं और उसकी ननद /अभियोजन साक्षी 7 के दाहिने हाथ पर भी चोट लग गई। यह आगे कहा गया है कि उक्त पानी जैसा पदार्थ डालने से पहले, जो अपीलार्थी/दोषी के हाथों में एल्यूमीनियम के कटोरे में था, उसके द्वारा कहा गया था कि "वह उसके चेहरे पर तेजाब फेंक रहा है क्योंकि वह उसकी प्रगति को स्वीकार नहीं कर रही थी। "यह कथन से बाहर प्रतीत होता है कि अपीलार्थी/दोषी पानी फेंकने के तुरंत बाद मौके से भाग गया और बाद में ग्रामीणों द्वारा पकड़ लिया गया, जिन्होंने उसपर हमला किया। सूचक ने कहा कि उपरोक्त हमला मारने और उसके चेहरे को विकृत करने के इरादे से किया गया था। सूचक ने वर्तमान घटना का कारण बताते

हुए कहा कि अपीलार्थी/दोषी के अपनी चचेरी सास मीरा देवी के साथ अवैध संबंध थे और उसने कई मौकों पर उसके प्रति यौन प्रगति भी दिखाई है और इसके लिए उसने पैसे की पेशकश भी की थी। उसे मेहसी अस्पताल में उसके पति और ननद /अभियोजन साक्षी 7 द्वारा अस्पताल लाया गया, जहाँ उसका वर्तमान बयान सब-इंस्पेक्टर एम. के. सिंह द्वारा दर्ज किया गया था।

**3.** उपरोक्त फरदबेयान के आधार पर, पुलिस ने आई. पी. सी. की धारा 324 और 307 के तहत अपराध के लिए 2002 का माहेशी पी. एस. मामला संख्या 60 दिनांक 16.06.2002 को मामला दर्ज किया, जहां जांच के बाद, पुलिस ने दिनांक -30.06.2002 को आरोप पत्र प्रस्तुत किया।

**4.** विद्वत न्यायिक मजिस्ट्रेट ने जाँच के दौरान एकत्र किए गए अभिलेख और सामग्रियों के अवलोकन के बाद, आई. पी. सी. की धारा 324 और 307 के तहत अपराधों के लिए संज्ञान लिया और मुकदमे के लिए 11.02.2003 पर सत्र न्यायालय को मामला सौंपा।

**5.** विद्वत निचली अदालत ने जाँच के दौरान एकत्र की गई सामग्री के आधार पर, अपीलार्थी/दोषी और अन्य सह-अभियुक्त व्यक्तियों के खिलाफ आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत अपराध के लिए आरोप तय किया, जिसे वह "दोषी नहीं" मानता है और मुकदमे का दावा करता है।

**6.** अपने मामले को साबित करने के लिए अभियोजन पक्ष ने कुल नौ गवाहों से पूछताछ की है, वे इस प्रकार हैं :

| **अभियोजन गवाह संख्या/ओं** | **नाम** |
|---|---|
| अभियोजन साक्षी 1 | भिखारी भगत (सूचक के पति के पड़ोसी और प्रतिनिधि) |
| अभियोजन साक्षी 2 | जानकी देवी (सूचक की सास) |
| अभियोजन साक्षी 3 | सुशीला देवी (अभियोजन साक्षी 1 की पत्नी) |
| अभियोजन साक्षी 4 | सत्य नारायण भगत (सूचक के पति) |
| अभियोजन साक्षी 5 | कांति देवी (सूचना देने वाली/पीड़ित) |
| अभियोजन साक्षी 6 | बिंदा भगत (सूचक के ससुर) |
| अभियोजन साक्षी 7 | कृष्ण कुमारी (सूचक की ननद) |
| अभियोजन साक्षी 8 | एस. आई. राज नारायण भगत (इस मामले के आई. ओ.) |
| अभियोजन साक्षी 9 | डॉ. देवेंद्र कुमार शर्मा |

**7.** मौखिक साक्ष्य के अलावा, अभियोजन पक्ष ने आरोपों को साबित करने के लिए निम्नलिखित दस्तावेजों/प्रदर्शों पर भी भरोसा किया हैः-

| **प्रदर्श सं०** | **दस्तावेजों की सूची** |
|---|---|
| प्रदर्श-1 | सूचक का फर्दबयान। |
| प्रदर्श-2 | अभियोजन साक्षी 7 की चोट रिपोर्ट की छायाप्रति। |
| प्रदर्श-2/ए | अभियोजन साक्षी 5/सूचक की चोट रिपोर्ट की छायाप्रति। |

**8.** मुकदमे के दौरान सामने आए सबूतों के आधार पर, विद्वत निचली अदालत ने संहिता की धारा 313 के तहत अपीलकर्ता/आरोपी की जांच की है, जहां उसने मुकदमे के दौरान सामने आए आपत्तिजनक सबूतों को नकारते हुए अपनी संलिप्तता से पूरी तरह से इनकार किया और कहा कि उसे इस मामले में झूठा फंसाया गया था और अपनी पूरी बेगुनाही का दावा किया।

**9.** अपने बचाव में मुकदमे के दौरान अपीलार्थी/दोषी द्वारा बचाव पक्ष के दो गवाहों से भी पूछताछ की गई और बचाव पक्ष के समर्थन में दो और दस्तावेज भी प्रदर्शित किए गए। वे इस प्रकार हैं :-

| **बचाव पक्ष के गवाहों की संख्या।** | **नाम** |
|---|---|
| बचाव साक्षी 1 | राम नारायण प्रसाद |
| बचाव साक्षी 2 | पृथ्वी नाथ चौरसिया |

| **प्रदर्श सं०** | **दस्तावेजों की सूची** |
|---|---|
| प्रदर्श-ए | लंगर भगत की चोट की रिपोर्ट। |
| प्रदर्श-बी | 2003 की एफ. आई. आर. महेशी पी. एस. केस संख्या 95 की फोटोकॉपी। |

**10.** दोषसिद्धि और सजा के आदेश के उपरोक्त निर्णय से व्यथित होने के कारण, अपीलार्थी/दोषी ने वर्तमान अपील को प्राथमिकता दी है।

**11. इसलिए, वर्तमान अपील।**

**<u>अपीलार्थी/दोषी की ओर से तर्क:</u>**

**12.** श्री रवि भारद्वाज, विद्वान न्यायमित्र, जबकि अदालत की सहायता करते हुए प्रस्तुत किया कि विद्वत विचारण न्यायालय द्वारा दर्ज अपीलार्थी/दोषी की दोषसिद्धि कानून की नजर में इस कारण से गलत प्रतीत होती है क्योंकि रिकॉर्ड पर उपलब्ध बयानों से "हत्या करने के ईरादे की " सुरक्षित रूप से एकत्र नहीं किया जा सकता है, जो आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत मामला बनाने के लिए प्रमुख विचार है। इस संदर्भ में यह

प्रस्तुत किया कि सूचक/अभियोजन साक्षी 5, जो स्वयं प्राथमिकी का लेखक है, ने प्रदर्श संख्या 1 के रूप में चिह्नित अपनी लिखित जानकारी के माध्यम से कहा कि अपीलकर्ता/दोषी ने उसके चेहरे पर तेजाब फेंक दिया क्योंकि वह उसका चेहरा विकृत करना चाहता था। यह बताया गया है कि उक्त एकल बातचीत से यह स्पष्ट है कि इरादा सूचक के चेहरे को विकृत करना था न कि उसे मारना। यह इंगित किया गया है कि अभियोजन साक्षी 5 और अभियोजन साक्षी 7 के बयानों से कई विरोधाभास दिखाई दे रहे हैं, जहां वे घटना के घायल गवाह होने का दावा कर रहे हैं। इस मामले में आई. ओ. से अभियोजन साक्षी 8 के रूप में पूछताछ की गई थी। यह इंगित किया जाता है कि मुकदमे के दौरान सामने आए विरोधाभासों को ध्यान में रखते हुए, अभियोजन साक्षी 5 और अभियोजन साक्षी 7 की गवाही को स्वीकार करना असुरक्षित है क्योंकि वे दोषसिद्धि प्राप्त करने के लिए "पूरी तरह से विश्वसनीय" प्रतीत नहीं हो रहे हैं।

**13.** विद्वान न्यायमित्र ने आगे तर्क देते हुए कहा कि अभियोजन साक्षी 1 और अभियोजन साक्षी 2 द्वारा बताए गए अनुसार अपीलार्थी/दोषी की गिरफ्तारी घटना के तुरंत बाद पीड़ित के घर के प्रांगण से दिखाई देती है, लेकिन इस मामले के आई. ओ. अभियोजन साक्षी 8 के बयानों से ऐसा प्रतीत होता है कि गाँव के ही लोगों द्वारा अपीलार्थी/दोषी को सुबह जल्दी यानी लगभग 6 बजे गिरफ्तार किया गया था| विद्वान न्यायमित्र द्वारा इस बात पर भी जोर दिया गया है कि अभियोजन साक्षी 8 के बयान को देखते हुए, कथित

एसिड युक्त एल्यूमीनियम के कटोरे को जब्त नहीं किया गया था और न ही जांच के दौरान कोई नमूना एकत्र किया गया था।

**14.** विद्वान *न्यायमित्र* श्री भारद्वाज द्वारा आगे यह प्रस्तुत किया गया है कि जहां तक पीड़ित की चोट का संबंध है, उन्होंने बताया कि निचली अदालत के समक्ष कोई चोट की रिपोर्ट प्रदर्शित नहीं की गई थी और यह केवल चोट की रिपोर्ट की प्रति थी, इसलिए यह सही मायने में नहीं कहा जा सकता है कि मुकदमे के दौरान "चोट" साबित हुई थी, ताकि इसे साक्ष्य में स्वीकार किया जा सके। यह भी बताया गया है कि अपीलार्थी/दोषी द्वारा की गई चोट ऐसी प्रकृति की नहीं थी, जिससे सूचक/अभियोजन साक्षी 5 की मृत्यु होने की संभावना हो।

**15.** तर्क का समापन करते हुए, विद्वान *न्यायमित्र* द्वारा यह प्रस्तुत किया जाता है कि पुलिस के उप-निरीक्षक, जिन्होंने अभियोजन साक्षी 5/सूचक का बयान दर्ज किया था, जबकि घायल को मेहसी अस्पताल में भर्ती कराया गया था, की सुनवाई के दौरान जांच नहीं की गई थी और इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता है कि मुकदमे के दौरान प्राथमिकी की सामग्री साबित हुई थी और केवल इसी आधार पर विद्वान निचली अदालत द्वारा दर्ज किए गए दोषसिद्धि के फैसले को निर्धारित करने के लिए उपयुक्त है।

**16.** तर्क पर आगे बढ़ते हुए, विद्वान *न्यायमित्र* ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय की कानूनी रिपोर्टों पर भरोसा किया जैसा कि **जग राम और**

**अन्य बनाम हरियाणा राज्य**, के मामले में पारित किया गया था जैसा कि **[(2015) 11 एस. सी. सी. 366]** में बताया गया है और **शिवाजी साहबराव बोबडे और एक अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य** के मामले में भी, जैसा कि **[(1973) 2 एस. सी. सी. 793]** में बताया गया है।

**<u>विद्वान सहायक लोक अभियोजक (एपीपी) की ओर से तर्क:</u>**

**17.** राज्य की ओर से उपस्थित विद्वान एपीपी श्रीमती अनीता कुमारी सिंह ने वर्तमान आपराधिक अपील का विरोध करते हुए कहा कि चोट की प्रकृति को समझने के लिए, अभियोजन साक्षी 5/पीड़ित की जांच करते समय विद्वान निचली अदालत के अवलोकन को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, जहां ऐसा प्रतीत होता है कि अदालत ने कहा कि "उसका चेहरा बुरी तरह से जल गया था और वह भयानक लग रहा था। "विद्वान एपीपी द्वारा यह भी प्रस्तुत किया गया है कि घायल गवाहों यानी अभियोजन साक्षी 5 और अभियोजन साक्षी 7 के बयानों को देखते हुए और अभियोजन साक्षी 9 के बयानों पर ध्यान देते हुए हमले और इरादे की गंभीरता को आसानी से एकत्र किया जा सकता है। यह बताया गया है कि तेजाब हमले का प्रावधान उपलब्ध नहीं था इसलिए उस समय आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत आरोप तय किया गया था।

**18.** तर्क पर आगे बढ़ते हुए, विद्वान एपीपी ने प्रस्तुत किया कि सूचना देने वाली एक देहाती ग्रामीण है, इसलिए उसके बयानों में मामूली विरोधाभास सामने आते हैं और केवल मामूली विरोधाभासों के आधार पर,

विद्वान निचली अदालत द्वारा दर्ज की गई सजा को संदेह के साथ नहीं देखा जा सकता है। विद्वान एपीपी द्वारा यह भी प्रस्तुत किया गया है कि घटना लगभग 12:30 पूर्वाह्न बजे घर के अंदर हुई थी| इसलिए परिवार के सदस्यों के रूप में अभियोजन पक्ष के गवाह इस मामले में काफी सामान्य हैं। इच्छुक गवाहों के आधार पर इसे पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता है।

**19.** तर्क को आगे समाप्त करते हुए, विद्वान एपीपी ने **बलराम उर्फ त्रिम्बक बनाम महाराष्ट्र राज्य [(2010) 6 एस. सी. सी. 673]**, के मामले में और **भरवादा भोर्गीभाई बनाम गुजरात राज्य, जैसा कि [(1983) 3 एस. सी. सी. 217]** में बताया गया है में पारित माननीय सर्वोच्च न्यायालय की कानूनी रिपोर्टों पर भरोसा किया।

**20.** मैंने निचली अदालत के रिकॉर्ड को ध्यान से पढ़ा है और अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्यों को देखा और प्रतिद्वंद्वी प्रस्तुतियों पर भी विचार किया जैसा कि पक्षों की ओर से उपस्थित विद्वान वकील द्वारा प्रचार प्रस्तुत किया गया था।

**21.** साक्ष्यों की पुनः मूल्यांकन करने के लिए, वर्तमान अपील का निपटारा करते समय, अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्यों पर चर्चा करना उचित है, जो निम्नानुसार हैं :-

**22.** **<u>अभियोजन साक्षी 5 कांति देवी</u>**, जो वर्तमान मामले की सूचक और पीड़ित हैं। उसने घटना की तारीख और समय का समर्थन किया और

अपने मुख्य परिक्षण के माध्यम से बयान दिया कि घटना के समय वह अपनी ननद कृष्ण कुमारी (अभियोजन साक्षी 7) के साथ सो रही थी। उसने स्पष्ट रूप से बयान दिया कि अपीलार्थी/दोषी द्वारा उस पर और उसकी ननद (अभियोजन साक्षी 7) पर कथित तेजाब जैसा पदार्थ फेंका गया था और उसके चिल्लाने पर उसकी सास, ससुर, चचेरा भाई, ससुर और उसका पति वहाँ आए और अपीलार्थी/दोषी को पकड़ लिया, जहाँ से उसे पुलिस स्टेशन ले जाया गया। वह पुलिस स्टेशन भी गई और एस. एच. ओ. को घटना के बारे में बताया, जिन्होंने उसकी शिकायत को लिखित में उतार दिया और उसे पढ़ा और इसे सही पाये जाने पर उसने उस पर अपने अंगूठे का निशान लगा दिया। मेहशी पुलिस स्टेशन में अपनी शिकायत दर्ज कराने के बाद वह मेहशी अस्पताल गई। अदालत ने उसकी मुख्य परीक्षण को रिकॉर्ड करते हुए देखा कि उसका चेहरा बुरी तरह से जला हुआ था। वह अपीलार्थी/दोषी द्वारा अपने चेहरे पर तेजाब फेंकने के पीछे के उद्देश्य के बारे में गवाही देने में विफल रही। उसके द्वारा यह अपदस्थ किया जाता है कि घटना के समय उसकी ननद (अभियोजन साक्षी 7) ने उसे बताया कि जिस व्यक्ति ने तेजाब फेंका वह अपीलकर्ता/दोषी था जिसका नाम लंगर भगत था। उसने मुकदमे के दौरान अपीलार्थी/दोषी की पहचान की। वह घटना के ठीक बाद अपीलार्थी/दोषी की पहचान करने में विफल रही क्योंकि घटना के दौरान उसकी आंखें क्षतिग्रस्त हो गई थीं।

**22.1.** जिरह पर, अभियोजन साक्षी 5/पीड़ित ने कहा कि वह कथित तेजाब हमले के बाद अपनी आँखें नहीं खोल सकी। उसने यह भी कहा कि उसे अपने परिवार के सदस्यों से सब कुछ पता चला।

**23.** **<u>अभियोजन साक्षी 7 कृष्ण कुमारी</u>**, जो ननद हैं सूचक /अभियोजन साक्षी 5 और घटना के घायल चश्मदीद गवाह, जिन्हें अपीलार्थी/दोषी द्वारा तेजाब फेंकने के कारण उनके दाहिने हाथ पर चोट लगी थी। उसने अपदस्थ कर दिया कि उसके रोने पर उसके चाचा, चाची, पिता, भाई और माँ आई और अपीलार्थी/दोषी लंगर भगत को पकड़ लिया और उसे स्थानीय चौकीदार को सौंप दिया। उन्होंने आगे कहा कि अपीलार्थी/दोषी को चौकीदार द्वारा पुलिस थाने लाया गया था।

**23.1.** जिरह पर उसने कहा कि जब वह अभियोजन साक्षी 5 के साथ सो रही थी तो अपीलार्थी/दोषी उसके घर में घुस गया। उसने अपीलार्थी /दोषी को तब देखा जब उसने तेजाब फेंका। तेजाब फेंकते समय अपीलार्थी/दोषी उसकी भाभी/अभियोजन साक्षी 5 के दाहिने तरफ था। अपीलार्थी/दोषी ने एक दूरी यानी 8 से 9 इंच की दूरी से तेजाब फेंका। वह किसी भी हथियार से लैस नहीं था। एसिड एल्यूमीनियम के बर्तन में था और यह उसके साथ था, जब उसे परिवार के सदस्यों ने पकड़ लिया था। उसने पुलिस के सामने कहा कि अपीलार्थी/दोषी ने उसकी भाभी/अभियोजन साक्षी 5 की आँखों पर तेजाब फेंका। उसने पुलिस के सामने कहा कि उसके भाई, माँ और चाचा ने अपीलार्थी/दोषी लंगर भगत को पकड़ लिया। उसने

इस बात से इनकार किया कि लंगर भगत (अपीलार्थी) को अगले दिन एक खुले मैदान से गिरफ्तार किया गया और उसके बाद उसे पुलिस को सौंप दिया गया। उसने इस बात से भी इनकार किया कि पीड़ित/अभियोजन साक्षी 5 के अपीलार्थी/दोषी के साथ प्रेम संबंध थे और इस कारण से उसे वर्तमान मामले में गलत फंसाया गया था।

**24.** अभियोजन साक्षी 1 भीखारी भगत, अभियोजन साक्षी 2 जानकी देवी, अभियोजन साक्षी 3 सुशीला देवी, अभियोजन साक्षी 4 सत्य नारायण भगत और अभियोजन साक्षी 6 बिंदा भगत ने लगभग उसी तरीके से वर्णन किया जैसा कि अभियोजन साक्षी 5 कांति देवी और अभियोजन साक्षी 7 कृष्ण कुमारी ने घटना के बारे में अपनी मुख्य परिक्षण में कहा था।

**24.1.** **<u>अभियोजन साक्षी 1 भीखारी भगत</u>** जिरह में कहा गया कि जब उन्होंने अपीलार्थी/दोषी को पकड़ा तो उसके हाथ में एक बर्तन था। उसने पुलिस को उक्त बर्तन के बारे में बताया।

**24.2.** **<u>अभियोजन साक्षी 2 जानकी देवी</u>** द्वारा अपने जिरह में कहा गया कि घटना की तारीख को यह एक अंधेरी रात थी। उन्होंने यह भी कहा कि अपीलार्थी/दोषी को उनके प्रांगण (आंगन) में पकड़ा गया था। उन्होंने आगे कहा कि सह-ग्रामीण भी घटना स्थल पर पहुंचे और उन्होंने अपीलार्थी/दोषी को पकड़ने में भी मदद की। उसने कहा कि पुलिस ने कभी भी घटना स्थल का दौरा नहीं किया। उसने स्पष्ट रूप से कहा कि एल्यूमीनियम पॉट और अपीलार्थी/दोषी दोनों को पुलिस को सौंप दिया गया था। उसने कहा कि

अपीलार्थी/दोषी के अपने ही ननद के साथ प्रेम संबंध था । लेकिन इससे वे नाखुश नहीं थे। उसने झूठा मामला दर्ज करने से इनकार कर दिया।

**24.3.** **<u>अभियोजन साक्षी 3 सुशीला देवी</u>** द्वारा अपने जिरह में कहा गया कि घटना की रात एक अंधेरी रात थी। उसने अपदस्थ कर दिया कि एल्यूमीनियम का बर्तन अपीलार्थी/दोषी के हाथ मेंथा। उन्होंने अपीलार्थी/दोषी को पकड़ने में मदद की। उसने झूठा मामला दर्ज करने के सुझाव से इनकार कर दिया क्योंकि अपीलार्थी/दोषी का उसकी ननद के साथ अवैध संबंध था।

**24.4.** **<u>अभियोजन साक्षी 4 सत्य नारायण भगत</u>**, जो अभियोजन साक्षी 5/पीड़ित के पति ने अपनी प्रतिपरीक्षा में कहा कि पुलिस घटना के अगले दिन उनके घर गई थी। उसने कहा कि उसकी पत्नी पुलिस स्टेशन में बयान देने की स्थिति में नहीं थी, इसलिए उसे पुलिस स्टेशन से मेहशी अस्पताल लाया गया। उन्होंने अपीलार्थी/दोषी के अपनी चाची मीरा देवी के साथ अवैध संबंध होने से इनकार किया।

**24.5.** **<u>अभियोजन साक्षी 6 बिंद भगत</u>,** जिन्होंने कहा था कि घटना के चश्मदीद ने अपनी प्रतिपरीक्षा में कहा कि अपीलार्थी/दोषी ने उनकी बहू (अभियोजन साक्षी 5) के चेहरे और अपनी बेटी की बांह पर तेजाब फेंका । यह बयान उनके पहले के बयान के विपरीत प्रतीत होता है कि वह अपनी बहू/अभियोजन साक्षी 5 और बेटी/अभियोजन साक्षी 7 के चिल्लाने पर घटना स्थल पर आए थे। उन्होंने अपीलार्थी/दोषी लंगर भगत को उनके

प्रांगण (*आंगन*) में ही पकड़ने के लिए कहा। उन्होंने झूठे बयान देने के सुझाव से इनकार कर दिया क्योंकि अपीलार्थी/दोषी के परिवार की महिला सदस्यों के साथ अवैध संबंध थे।

**25.** **<u>अभियोजन साक्षी 8 उप-निरीक्षक राज नारायण भगत</u>** उसने बताया कि वह मेहशी पुलिस स्टेशन में 16.06.2002 पर तैनात था, जहाँ एस. एच. ओ. नागेंद्र कुमार सिंह द्वारा सूचक/अभियोजन साक्षी 5 का फरदबेयान दर्ज किया गया था। उन्होंने अपने लेखन की पहचान सहयोगी होने के रूप में की और उनकी पहचान पर फरदबेयान को प्रदर्श संख्या 1 के रूप में चिह्नित किया गया। उन्होंने औपचारिक एफ. आई. आर. पर हस्तलेखन की भी पहचान की, जिसे पहचान होने पर प्रदर्श संख्या 2 के रूप में चिह्नित किया गया था। उन्होंने पी. एच. सी., मेहशी में घायल का बयान दर्ज कराया। उन्होंने उसी अस्पताल में अभियोजन साक्षी 7 कृष्णा कुमारी का बयान भी दर्ज किया। उन्होंने अस्पताल में ही सत्य नारायण भगत का बयान भी दर्ज किया। उन्होंने दौरे के बाद घटना स्थल का वर्णन किया। उन्होंने अभियोजन साक्षी 5 और अभियोजन साक्षी 7 दोनों की चोट की रिपोर्ट प्राप्त की।

**25.1.** अपनी प्रतिपरीक्षा पर उन्होंने पदच्युत किया कि उन्होंने 16.06.2002 पर घटना स्थल का दौरा किया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि घटना स्थल पर उन्हें कुछ काला पदार्थ मिला, लेकिन यह एकत्र करने की स्थिति में नहीं था ताकि उसे आगे रासायनिक/फोरेंसिक जांच के लिए भेजा

जा सके। उन्होंने कहा कि जब उन्हें इस मामले की जांच दी गई थी, उस समय अपीलार्थी/दोषी मेहशी पुलिस स्टेशन की पुलिस हिरासत में था। उन्होंने इस बात से इनकार किया कि भिखारी भगत ने उनके सामने कभी अपना बयान नहीं दिया कि जब वह घटना स्थल पर पहुंचे तो अपीलार्थी/दोषी वहां मौजूद थे। उन्होंने इस बात से भी इनकार किया कि भीखारी भगत ने जांच के दौरान कभी ऐसा कोई बयान नहीं दिया कि उन्होंने बिंदा भगत, जानकी देवी, सुशीला देवी और भीखारी भगत के साथ अपीलार्थी/दोषी को पकड़ लिया। उन्होंने यह भी कहा कि जानकी देवी ने जांच के दौरान उनके सामने कभी कोई बयान नहीं दिया कि उन्होंने लंगर भगत को मिट्टी के दीपक (*दीया*) की रोशनी में तेजाब फेंकते देखा था। उन्होंने इस बात से भी इनकार किया कि जानकी देवी ने कभी नहीं कहा कि लंगर भगत को उनके प्रांगण में गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने यह भी कहा कि सुशीला देवी ने उनके सामने कभी यह बयान नहीं दिया कि रोने की आवाज सुनकर वह जागी और कमरे में चली गई। अभियोजन साक्षी 5/कांति देवी और अभियोजन साक्षी 7/कृष्ण कुमारी। उन्होंने यह भी कहा कि अभियोजन साक्षी 3 ने कभी नहीं कहा कि अपीलार्थी/दोषी ने अभियोजन साक्षी 5 और अभियोजन साक्षी 7 पर तेजाब डाला। उन्होंने यह भी बयान दिया कि अभियोजन साक्षी 3 ने कभी नहीं कहा कि अपीलार्थी /दोषी को उसकी ननद और अभियोजन साक्षी 6 ने उससे पहले पकड़ा था। उन्होंने कहा कि अभियोजन साक्षी 3 ने उनके सामने कभी नहीं कहा कि अपीलार्थी/दोषी के पास एक घड़ा था, जिसे उन्होंने चौकीदार को दिया था।

उन्होंने आगे कहा कि अभियोजन साक्षी 4 ने कभी नहीं कहा कि अपीलार्थी /दोषी को उसके और परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा पकड़ा गया था। अभियोजन साक्षी 4 ने कभी नहीं कहा कि वह अकेले बगीचे में सोते थे। अभियोजन साक्षी 6 ने कहा कि वह अपनी पत्नी और बेटे के साथ गोशाला में सोते थे। अभियोजन साक्षी 6 अपनी बहू का चिल्लाना सुनकर घर की ओर दौड़ी। अभियोजन साक्षी 6 ने कभी नहीं कहा कि उसने अपीलार्थी/दोषी को अभियोजन साक्षी 5 और अभियोजन साक्षी 7 पर तेजाब फेंकते देखा। बिंदा भगत/अभियोजन साक्षी 6 ने कभी यह नहीं कहा कि अपीलार्थी/दोषी को परिवार के सदस्यों ने आंगन में पकड़ लिया था। कृष्ण देवी ने कभी यह नहीं कहा कि जब अपीलार्थी/दोषी को पकड़ा गया था तो उसके हाथों में बर्तन था। कृष्ण देवी ने कभी नहीं कहा कि उनके भाई, माँ, चाचा और चाची अपीलार्थी/दोषी को आंगन में पकड़ते हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि जांच के दौरान अभियोजन पक्ष के गवाहों ने कहा कि अपीलार्थी/दोषी को लगभग 6:00 A.M. बजे सह-ग्रामीणों की मदद से मैदान से गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने जाँच के दौरान अपीलार्थी/दोषी का बयान भी दर्ज किया, जिसने अपनी बेगुनाही का दावा किया और कहा कि भूमि संबंधी विवाद के कारण, जो सूचक के साथ 1976 से लंबित है, उन्हें वर्तमान मामले में गलत तरीके से फंसाया गया था।

**26.** **<u>अभियोजन साक्षी 9 डॉ. देवेंद्र कुमार शर्मा,</u>** जो अपने मुख्य परीक्षण में कहा कि यह बैटरी में उपयोग किए जाने वाले सीसे के एसिड के पानी के कारण एसिड जलने का मामला था। उन्होंने घटना के तुरंत बाद

अभियोजन साक्षी 5 कांति देवी और अभियोजन साक्षी 7 कृष्ण कुमारी की जांच की, अर्थात 1:30 A.M.| उन्होंने घायल कृष्णा कुमारी की बांह और गर्दन के क्षेत्र में लाल सूजन पाई और कांति देवी के चेहरे की ओर गर्दन पर भी इसी तरह की लाल सूजन पाई गई, वह आंखों में गंभीर दर्द से पीड़ित थी। उसकी आँखों का रंग सफेद हो गया लेकिन कुछ दृष्टि थी। उसका चेहरा विकृत हो गया था।

**27.** विद्वान न्यायमित्र द्वारा उद्धृत निर्णयों को पुनः प्रस्तुत करना उचित होगा।

**27.1. जाग राम मामले में (ऊपर)** पैरा संख्या 12, 13 और 14, जो निम्नानुसार हैः

> **12.** आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत दोषसिद्धि के उद्देश्य से, अभियोजन पक्ष को *(i)* हत्या करने का इरादा; और *(ii)* अभियुक्त द्वारा किया गया कार्य स्थापित करना होगा। अभियोजन पक्ष पर बोझ है कि अभियुक्त ने अभियोजन पक्ष के गवाह की हत्या करने का प्रयास किया था। क्या अभियुक्त व्यक्ति का किसी अन्य व्यक्ति की हत्या करने का इरादा था, यह प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत दोषसिद्धि को सही ठहराने के लिए, यह आवश्यक नहीं है कि मृत्यु का कारण बनने में सक्षम घातक चोट लगी हो। यद्यपि वास्तव में हुई चोट की प्रकृति अभियुक्त के इरादे के बारे में निष्कर्ष पर पहुंचने में सहायता कर सकती है, लेकिन इस तरह के इरादे को अन्य परिस्थितियों से भी जोड़ा जा सकता है। अभियुक्त का इरादा इस्तेमाल किए गए हथियार की प्रकृति, घटना के समय अभियुक्त द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द, अभियुक्त का मकसद, शरीर के उस हिस्से में जहां चोट लगी थी

और चोट की प्रकृति और दिए गए प्रहारों की गंभीरता आदि जैसी परिस्थितियों से एकत्र किया जाना है।

**13.** *एम. पी. राज्य बनाम काशीराम [एम. पी. बनाम राज्यकाशीराम (2009) 4 एस. सी. सी. 26: (2009) 2* एससीसी (सीआरआई) 40:ए. आई. आर. 2009 एस. सी. 1642], आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत दोषसिद्धि आकर्षित करने के इरादे का दायरा विस्तृत किया गया था और इसे निम्नानुसार अभिनिर्धारित किया गया थाः(एस. सी. सी. पीपी. 29-30, पैरा 12-13)

*"12. ... '13. यह धारा 307* के तहत दोषसिद्धि को उचित ठहराने के लिए पर्याप्त है यदि उसके निष्पादन में किसी स्पष्ट कार्य के साथ कोई इरादा मौजूद है। यह आवश्यक नहीं है कि मृत्यु का कारण बनने में सक्षम शारीरिक चोट लगी हो। यह धारा अभियुक्त के कार्य और उसके परिणाम, यदि कोई हो, के बीच अंतर करती है। अदालत को यह देखना होगा कि क्या कार्य अपने परिणाम की परवाह किए बिना, इरादे या ज्ञान के साथ और धारा में उल्लिखित परिस्थितियों में किया गया था।इसलिए, आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत आरोपित एक आरोपी को केवल इसलिए बरी नहीं किया जा सकता है क्योंकि पीड़ित को लगी चोटें साधारण चोट की प्रकृति की थीं।

*14.* इस स्थिति को *महाराष्ट्र राज्य बनाम बलराम बामा पाटिल [महाराष्ट्र राज्य बनाम बलराम बामा पाटिल, (1983) 2 एस. सी. सी. 28, 1983 एस. सी. सी. (सी. आर. आई.) 320]*, गिरिजा शंकर बनाम उत्तर प्रदेश राज्य [गिरिजा शंकर बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, (2004) 3 एस. सी. सी. 793:2004 एस. सी. सी. (सी. आर. आई.) 863] और आर. प्रकाश बनाम कर्नाटक राज्य [आर. प्रकाश बनाम कर्नाटक राज्य, (2004) 9 एस. सी. सी. 27:2004 एस. सी. सी. (सी. आर. आई.) 1408] में उजागर किया गया था |

*16.* क्या हत्या करने का इरादा था या यह ज्ञान था कि मृत्यु हो जाएगी, यह एक तथ्य का प्रश्न है और यह किसी दिए गए मामले के तथ्यों पर निर्भर करेगा। यह तथ्य कि

आरोपी द्वारा किया गया चोट साधारण या मामूली था, अपने आप में आईपीसी की धारा 307 के आवेदन को समाप्त नहीं करेगा। निर्णायक प्रश्न इरादा या ज्ञान है, जैसा कि मामला हो सकता है, और चोट की प्रकृति नहीं है।'

राज्य बनाम सलीम [सलीम मामला, (2005) 5 एससीसी 554 : 2005 एससीसी (क्री) 1329], एससीसी पीपी 559-60, पैरा 13-14 और 16 देखें।

*13.* '6. अपर्याप्त सजा देने के लिए अनुचित सहानुभूति कानून की प्रभावशीलता में जनता के विश्वास को कम करने के साथ न्याय प्रणाली को अधिक नुकसान पहुंचाएगी और समाज इस तरह के गंभीर खतरों को लंबे समय तक सहन नहीं कर सकता है। इसलिए, यह, प्रत्येक न्यायालय का कर्तव्य है की अपराध की प्रकृति और उसे निष्पादित करने या करने के तरीके आदि को ध्यान में रखते हुए उचित सजा दे । यह स्थिति इस न्यायालय द्वारा सेवक पेरुमल बनाम तामिल नाडू राज्य मामले में स्पष्ट रूप से कही गई थी [सेवका पेरुमल बनाम टी. एन. राज्य, (1991) 3 एस. सी. सी. 471:1991 एस. सी. सी. (सी. आर. आई.) 724] '(सलीम मामला [सलीम मामला, (2005) 5 एस. सी. सी. 554:2005 एस. सी. सी. (सी. आर. आई.) 1329], एस. सी. सी पी.558, पैरा 6) "

**14.** सुखबीर के सिर पर चोट पहुँचाने के लिए इस्तेमाल किए गए हथियार, चोटों की प्रकृति, चोटों की स्थिति और प्रहारों की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए, निचली अदालतों ने आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत दूसरे अपीलार्थी को दोषी ठहराते हुए समवर्ती निष्कर्ष दर्ज किए। हमारे सुविचारित विचार में, आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत दूसरे अपीर्थी राजबीर उर्फ राजू की दोषसिद्धि अक्षम्य है।

27.2. **शिवाजी साहबराव बोबडे** मामले में **(ऊपर)** पैरा नं. 8, जो निम्नानुसार हैः-

**8.** अब तथ्यों पर आते हैं। हत्या का दृश्य ग्रामीण है, मामले के गवाह देहाती हैं और इसलिए

उनका व्यवहार पैटर्न और बोधगम्य आदतों को इस तरह से आंका जाना चाहिए। मानवीय आचरण के बारे में अवास्तविक धारणाओं के आधार पर अदालतों में परिचित बहुत परिष्कृत दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से हमारे गाँवों के सुस्त तरीकों पर लागू नहीं किए जा सकते हैं। विभिन्न गवाहों के साक्ष्य को स्कैन करते समय हमें खुद को सूचित करना होगा कि सीमांत पर भिन्नताएं, विवरणों में विसंगतियां, वर्णनों में विरोधाभास और अनावश्यक भागों में अलंकरण गवाही के मूल की सत्यता के खिलाफ नहीं हो सकते हैं बशर्ते कि सच्चाई का प्रभाव हो और दिए गए गवाही के पर्याप्त ताने-बाने में संभावना के अनुरूप हो।विद्वान सत्र न्यायाधीश ने कुछ हद तक साक्ष्य का विच्छेदन किया है, विरोधाभासों और अप्राकृतिक आचरण को अलग किया है, और अपराध से जुड़ी घटनाओं के समय और अनुक्रम का सटीक परीक्षण किया है, यह सब चिकित्सा साक्ष्य और पोस्टमॉर्टम प्रमाण पत्र की कसौटी पर आधारित है। निश्चित रूप से, जिस अदालत ने गवाहों को गवाही देते देखा है, उसे अपीलीय न्यायाधीश पर बहुत लाभ है जो दर्ज किए गए साक्ष्य को ठंडे बस्ते में पढ़ता है, और को ध्यान में रखा जाना चाहिए। यह लाभ विचारण न्यायाधीश को अपने समक्ष तथ्यों की शपथ लेने वाले व्यक्तियों के आचरण और वितरण का निरीक्षण करने, सरलता और संदिग्ध स्पष्टता, देहाती निष्कपटता और चतुरतापूर्ण संदेह को पढ़ने, हेरफेर किए गए अनुरूपता और चतुराई से असंवेदनशीलता का लाभ मिलता है। फिर भी, जहाँ कोई न्यायाधीश शपथ लेते समय गवाह की प्रत्यक्षता या संदेह पर नहीं, बल्कि सामान्य संभावनाओं और विशेषज्ञ साक्ष्य पर अपना निष्कर्ष निकालता है, वहाँ अपील न्यायालय मूल्यांकन करने या वैध निष्कर्ष पर पहुँचने की उतनी ही अच्छी स्थिति में होता है जितनी कि प्रथम दृष्टांत न्यायालय। न ही हम मुकदमे के न्यायाधीश की मानसिक अंतर्दृष्टि की कल्पना कर सकते हैं।

**28.** विद्वान एपीपी द्वारा उद्धृत निर्णयों को पुनः प्रस्तुत करना उचित होगा।

**28.1. बलराजे उर्फ त्रिम्बक मामले में (ऊपर)** पैरा सं 29 और 30, जो नीचे लिखे अनुसार हैः-

> **29.** कानून काफी अच्छी तरह से तय किया गया है कि भले ही सह-अभियुक्त के संबंध में इस आधार पर दोषमुक्ति दर्ज की जाती है कि अतिशयोक्ति और अलंकरण थे, फिर भी दोषसिद्धि दर्ज की जा सकती है यदि साक्ष्य किसी अन्य अभियुक्त के संबंध में ठोस, विश्वसनीय और सच्चा पाया जाता है। केवल यह तथ्य कि गवाह मृतक से संबंधित थे, उनके साक्ष्य को खारिज करने का आधार नहीं हो सकता है।
>
> **30.** कानून में, एक घायल गवाह की गवाही को महत्व दिया जाता है। जब प्रत्यक्षदर्शियों अभियुक्त के सजा के प्रति अभिरूचिपूर्ण हो और शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने वाला कहा जाता है, तो यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा कि वे वास्तविक अपराधी को बचा लेंगे और निर्दोष व्यक्तियों को पकड़ लेंगे। साक्ष्य की सच्चाई या अन्यथा को व्यावहारिक रूप से तौलना होगा। अदालत को संबंधित गवाहों और उन गवाहों के साक्ष्य का विश्लेषण करने की आवश्यकता होगी जो अभियुक्त के प्रति शत्रुतापूर्ण तरीके से निपटाए गए हैं। लेकिन अगर उनके साक्ष्य के सावधानीपूर्वक विश्लेषण और जांच के बाद, गवाहों द्वारा दिया गया बयान स्पष्ट, ठोस और विश्वसनीय प्रतीत होता है, तो उसे खारिज करने का कोई कारण नहीं है। इस तरह के सबूत के आधार पर दोषसिद्धि दी जा सकती है।

**28.2. भारवाड़ा** में **भोगिनभाई हिरजिभाई** मामला **(ऊपर)** पैरा सं० 5 और 6, जो नीचे लिखे अनुसार हैः-

> **5.** .....कारण स्पष्ट हैंः

*"(1)* मोटे तौर पर एक गवाह से यह उम्मीद नहीं की जा सकती है कि उसके पास एक फोटोग्राफिक मेमोरी हो और वह किसी घटना के विवरण को याद कर सके। ऐसा नहीं है कि एक वीडियो टेप को मानसिक स्क्रीन पर फिर से चलाया जाता है।

*(2)* आम तौर पर ऐसा होता है कि एक गवाह घटनाओं से घबरा जाता है। गवाह उस घटना का अनुमान नहीं लगा सकता था जो अक्सर आश्चर्यचकित करने वाली होती है। इसलिए मानसिक क्षमताओं से विवरणों को अवशोषित करने के लिए अनुकूलित होने की उम्मीद नहीं की जा सकती है।

*(3)* अवलोकन की शक्तियाँ एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होती हैं।जिसे एक देख सकता है, दूसरा नहीं भी देख सकता है। एक वस्तु या गतिविधि एक व्यक्ति के दिमाग पर अपनी छवि बना सकती है, जबकि यह दूसरे की ध्यान में भी नहीं जा सकता है।

*(4)* बहुत से लोग एक बातचीत को सटीक रूप से याद/दोहरा नहीं सकते हैं और उनके द्वारा उपयोग किए गए या उनके द्वारा सुने गए शब्दों को पुनः प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं। वे केवल बातचीत के मुख्य उद्देश्य को याद कर सकते हैं। एक गवाह से मानव टेप-रिकॉर्डर होने की उम्मीद करना अवास्तविक है।

*(5)* एक घटना के सटीक समय के संबंध में, या किसी घटना की समय अवधि, आमतौर पर, लोग पूछताछ के समय पल की गति पर अनुमान-कार्य करके अपना अनुमान लगाते हैं। और ऐसे मामलों में लोगों से बहुत सटीक या विश्वसनीय अनुमान लगाने की उम्मीद नहीं की जा सकती है। पुनः, यह व्यक्तियों के समय-बोध पर निर्भर करता है जो व्यक्ति-दर-व्यक्ति भिन्न होता है।

*(6)* आम तौर पर एक गवाह से उन घटनाओं के अनुक्रम को सटीक रूप से याद करने की उम्मीद नहीं की जा सकती है जो तेजी से या कम समय में होती हैं। एक गवाह भ्रमित हो सकता है, या बाद में पूछताछ करने पर भ्रमित हो सकता है।

(7) एक गवाह, हालांकि पूरी तरह से सच्चा है, अदालत के माहौल और वकील द्वारा की गई भेदी प्रतिपरीक्षा और घबराहट के कारण तथ्यों को मिलाने, घटनाओं के क्रम के बारे में भ्रमित होने या पल भर में कल्पना से विवरण भरने लग सकता है। गवाह का अवचेतन मन कभी-कभी मूर्ख दिखने या अविश्वास होने के डर के कारण काम करता है, हालांकि गवाह अपने द्वारा देखी गई घटना का एक सच्चा और ईमानदार विवरण दे रहा है-शायद यह एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक रक्षा तंत्र है जो पल भर में सक्रिय हो जाता है।"

**6.** विसंगतियाँ जो मामले की जड़ तक नहीं जाती हैं और गवाहों के मूल संस्करण को नहीं हिलाती हैं इसलिए अनुचित महत्व के साथ जोड़ा नहीं जा सकता है| ख़ास कर जब सभी महत्वपूर्ण "संभावना कारक" गवाहों द्वारा बताए गए संस्करण के पक्ष में प्रतिध्वनित होते हैं ।

**29.** उपरोक्त गवाहों की चर्चाओं से निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं, जो अभियोजन मामले के संबंध में संदेह पैदा करते हैं ।

**(i)** घटना का स्थान एक कमरा था और यह आधी रात थी, प्रकाश का कोई स्रोत नहीं था और ऐसी पृष्ठभूमि में, जो व्यक्ति अभियुक्त से परिचित नहीं हैं, इसलिए उसकी पहचान संदिग्ध प्रतीत होती है। अभियोजन साक्षी 5, सूचक/घायल ने स्वयं स्पष्ट रूप से कहा कि वह अपीलार्थी/दोषी से परिचित नहीं थी और घटना के दौरान उसकी आँख बंद रहती है और उसे इस तथ्य के बारे में केवल अभियोजन साक्षी 7 से पता चला कि अपीलार्थी ने उस पर केवल तेजाब फेंका था।

**(ii)** अभियोजन साक्षी 5/सूचक सहित अभियोजन पक्ष के लगभग सभी गवाहों ने कहा कि अपीलार्थी/दोषी को घटना के तुरंत बाद

उनके (*आंगन*) में एल्यूमीनियम के बर्तन के साथ गिरफ्तार किया गया था, जिसके माध्यम से उसने घायल (अभियोजन साक्षी 5 और अभियोजन साक्षी 7) पर तेजाब डाला था, जिसे अपीलार्थी के साथ स्थानीय चौकीदार को सौंप दिया गया था, लेकिन एल्यूमीनियम के बर्तन को कभी जब्त नहीं किया गया और न ही रासायनिक/फोरेंसिक जांच के लिए भेजा गया। इस मामले में जाँच अधिकारी/अभियोजन साक्षी 8 ने स्पष्ट रूप से बयान दिया कि अभियोजन पक्ष के गवाहों ने जाँच के दौरान कहा कि अपीलार्थी/दोषी को सुबह गिरफ्तार किया गया था, जब वह खेत कार्य में भाग ले रहा था। इसलिए, घटना के बाद तत्काल गिरफ्तारी के बिंदु पर, सूचक /अभियोजन साक्षी 5 के प्रांगण में, गवाह पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं दिखाई दे रहे हैं, यहां तक कि वे घायल गवाह भी हैं। अभियोजन साक्षी 8/आई. ओ. ने किसी भी एल्यूमीनियम के बर्तन को इकट्ठा करने/जब्त करने से इनकार कर दिया। उन्होंने घटना स्थल पर जमीन पर छिड़का हुआ पाया गया काला पदार्थ इकट्ठा करने से इनकार कर दिया और इसे रासायनिक/ फोरेंसिक जांच के लिए नहीं भेजा, ताकि यह पता लगाया जा सके कि यह एसिड था या नहीं। रासायनिक परीक्षण के अभाव में कथित रूप से फेंके गए पानी जैसे पदार्थ को आई. पी. सी. की धारा 326 के अर्थ के भीतर संक्षारक पदार्थ के रूप में भी वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, केवल चोट के आधार पर, संदेह से परे ।

**30.** प्रदर्श संख्या 1 के रूप में चिन्हित फर्दबयान से यह प्रतीत होता है कि कथित एसिड फेंकते समय, अभियुक्त/दोषी ने यह इरादा

व्यक्त किया था कि वह पीड़ित/पीडब्ल्यू 5 का चेहरा विकृत करना चाहता था, लेकिन उसकी हत्या करने का कोई इरादा नहीं दिखाया गया था। पीडब्ल्यू 8/डॉक्टर के बयान में कहीं भी यह सुझाव नहीं दिया गया है कि उसकी चोट जानलेवा थी, इसलिए अभियुक्त के कार्य के रूप में मृत्यु का कारण बनने की संभावना वाला इरादा या ज्ञान अनुपस्थित है, जैसा कि अभियुक्त/दोषी के खिलाफ आईपीसी की धारा 307 के तहत दोषसिद्धि सुनिश्चित करने के लिए परीक्षण के दौरान सामने आए तथ्यों से पता चलता है।

**31.** तदनुसार, अपील स्वीकार की जाती है।

**32.** 2003 के सत्र परीक्षण सं. 112/106 में द्वितीय अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण द्वारा पारित दोषसिद्धि का निर्णय दिनांक 10.01.2004 और सजा का आदेश दिनांक 13.01.2004, इसके द्वारा रद्द कर दिया जाता है। ऊपर नामित अपीलार्थी को संदेह का लाभ देकर उसके खिलाफ लगाए गए आरोपों से बरी कर दिया जाता है।

**33.** यदि अपीलार्थी इस मामले के संबंध में हिरासत में है, तो उसे किसी अन्य मामले में आवश्यक नहीं होने पर तुरंत रिहा करने का निर्देश दिया जाता है।

**34.** पटना उच्च न्यायालय की कानूनी सेवा समिति को निर्देश दिया जाता है कि वह श्री रवि भारद्वाज, विद्वान न्यायमित्र को 5,000 रुपये (पाँच हज़ार रुपये मात्र) का भुगतान करे जो कि वर्तमान अपील के निपटान

के लिए उनकी मूल्यवान पेशेवर सेवा प्रदान करने के लिए समेकित शुल्क के रूप में दिया जाता है।

**35.** कार्यालय को निर्देश दिया जाता है कि वह विचारण न्यायालय के रिकॉर्ड को फैसले की एक प्रति के साथ वापस भेज दे।

**(चंद्र शेखर झा, न्यायमूर्ति)**

एस. त्रिपाठी/-

**खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नही किया जा सकता । समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।**